OM 18_Page 1 and 2 01-12-2014 20:05 Page 4

समय...

जीवन की गिनती वर्षों में नहीं होती। वरन् गिनती यह होती है कि जीवन में कितने समय का सदुपयोग किया गया। सफल होने के लिए, महान होने के लिए लम्बा जीवन नहीं चाहिए। चाहिए केवल समय का सदुपयोग। स्वामी विवेकानंदजी कुल 36 वर्ष तक जीवित रहे। क्या वे आज हमारे बीच जिन्दा नहीं है? आदिशंकराचार्य कुल 32 वर्ष जीवित रहे। इतनी छोटी अवधि में ही उन्होंने पांच पीठों की स्थापना कर डाली। सुकरात, जीसस, गुरू गोविन्द सिंह सभी छोटी उम्र में ही महान हो गए। महान होने के लिए समय की सदुपयोगिता ज़रूरी है न कि समय की प्रचुरता। आप समय को पीछे नहीं भेज सकते, समय को फॉरवर्ड नहीं कर सकते, समय को स्टोर नहीं कर सकते। समय का केवल उपयोग किया जा सकता है। क्योंकि समय का कोई विकल्प नहीं है। समय मुफ्त में मिला है कोई चार्ज नहीं है। गुलाब का फूल खिला, खुशबू बिखेरी, वातारण सुगन्धित हुआ। हवा का तेज़ झोंका आया व कुछ देर बाद ही पंखुड़ियां बिखर गईं। फूल निर्जीव हो गया। गुलाब को कौन पसन्द नहीं करता। कितना अल्प जीवन है लेकिन सभी को प्यारा है। समय का पैमाना तो सबके लिए अलग-अलग है। इसलिए समय रहते उसका सदुपयोग कर लो, नहीं तो हाथ मलते रह जाना होगा!

न कल था, न कल होगा। केवल आज है, यही सत्य है। कल और अनिश्चितता को छोड़कर, निश्चितता में जीयो तो सफलता होगी। कल नाम का कोई जीव-जन्तु, समय, चक्र, अवस्था कुछ भी नहीं है। आपका समय तो आज और अभी ही है। भविष्य का चिंतन किया जा सकता है। मनन किया जा सकता है, योजना बनाई जा सकती है। लेकिन चिंता नहीं की जा सकती। क्योंकि भविष्य की ज्यादातर योजनाएँ अपना आकार ही नहीं ले पाती हैं। फिर यह भी तो सत्य है कि - ''क्षण भंगुर जीवन की कलिका, कल प्रात: जाने खिले न खिले।'' जब हमें अपने अगले पल का ही पता नहीं है तो हम कल की चिंता में अपना आज क्यों नष्ट करें? कल की चिंता से जो समय बचेगा उसे आज में लगाएंगे तो आज सुधरेगा। आज सुधरेगा तो यह भी हमारा विगत कल अर्थात् बीता हुआ कल होगा, जो सुखद कहा जाएगा। अत: हमें संकल्प करना चाहिए कि - ''मैं आज ही काम करूंगा।'' और चुनौती देनी होगी कि, ''कल तू चाहे, जो कर लेना मैं कल से नहीं डरता।'' जो बीत गया उसे कोई वापस नहीं ला सकता। किसी एक दार्शनिक ने लिखा है कि सब कुछ बदलता है केवल बदलाव का नियम नहीं बदलता। जीवन भी पल-पल बदलता है। केवल आज सत्य है। आज का उपभोग करो। आज का स्वागत करो। आज का अभिनंदन करो। केवल आज ही आपके कदमों के नीचे ठोस धरती है। एक कल चला गया और दूसरा कल अभी कोहरा है। जब हम ठोस धरती पर कदम रखेंगे तभी तो आगे कदम बढ़ा पाएंगे। आज तक वही लोग जीते है जिन्होंने अपनी स्थिति को आज जैसी है उसी रूप में स्वीकार कर लिया है और अपने काम में जुट गए।

आज ही सत्य है। आज में न कुछ जोड़ना है और न कुछ घटाना है। जो कल बीत गया है, उसमें भी लोग कुछ जोड़ते घटाते रहते हैं। जो कल आने वाला है उसके लिए भी ताना बाना बुनना पड़ेगा। लेकिन आज तो वास्तविक है। ''जिसने जाना आज, उसने पहना ताज़।'' आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि आप कितनी असीम शक्ति के मालिक हैं। कितनी खुशियाँ आपका इन्तजार कर रही हैं। आपके ऊपर तो सफलता और खुशियों की बरसात हो सकती है, बशर्ते आप चाहें। नए बादल बरसने के लिए तैयार हैं लेकिन आप अतीत की चिन्ता में घुले जा रहे हैं। भविष्य की खोज में व्यस्त हैं। आप वर्तमान में नहीं हैं, जबकि बरसात केवल वर्तमान में होती है। कुछ पाने का एक ही समय है वर्तमान। जिस दिन आप वर्तमान में ही जीओगे, उसी दिन आपको सब कुछ मिल जाएगा। अगर आप आज का रहस्य जान गए तो महसूस करेंगे कि आज कितना सुन्दर है, कितना सुखद है, कितना आनन्ददायक है। इस सुन्दरता का वर्णन नहीं हो सकता। इसे केवल महसूस किया जा सकता है। केवल आनन्दित हुआ जा सकता है, क्योंकि आज में जीते हुए, आज में काम करने का संतोष ही सबसे बड़ा आनन्द है। कुछ सुखद घटनाएं तो यहां स्वयं ही घटित हो रही हैं जैसे - किसी परिन्दे से पूछो कि वे सुबह-सुबह क्यों चहचहाते हैं? क्यों गीत गाते हैं?, फूलों से पूछो कि प्रात:काल उनके खिलने का कारण क्या है?, दीपक से कोई पूछे कि उसकी रोशनी का क्या राज है?, मछली से पानी का स्वाद पूछा जाए। भौरों से पूछो कि वे क्यों गुनगुनाते हैं? इन सबका राज यही है कि ये सब न केवल वर्तमान में जीते हैं बल्कि हर पल को जीते हुए उसका सदुपयोग करते हैं, उसका आनन्द लेते हैं। किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। आज प्रात: काल के लिए शुभकामना आज का दिन शुभ हो। दोपहर -बधाई हो आज के दिन के लिए और रात्रिकाल के लिए धन्यवाद कि आज का दिन बड़ा शुभ रहा।

समय की धूरी पर चलना बहुत कठिन है, लेकिन धूरी के साथ साथ चलना आसान है, क्योकि वो 'पर है और ये 'साथ है। भाव यह है कि समय की गति एक समान है और हमारी गति कभी अति मंद कभी अति तीव्र है। जीतता वही है जो समय के पहले तैयारी कर ले। जीतने के लिए तो हम पूरी दुनिया को जीत सकते हैं लेकिन उसके लिए सबसे पहले हमें आलस्य को जीतना होगा। समय का शिक्षक हमें बनना होगा। तभी समय के साथ हम निर्णय कर पायेंगे।

- ब्र.कु. दिलीप राजकुले,शांतिवन

वुरुलिया-प.ब.। डॉ. निलंजना सेन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संध्या। साथ हैं डॉ. के.के. दास, ब्र.कु. कुसुम तथा ब्र.कु. सोभन।

राजयोग ने.... पेज 8 का शेष

प्रश्न: आप इंदौर से ही हैं?

उत्तर: मैं पला-बढ़ा देहरादून में हूँ, बाद में मैं इन्दौर आया। मैं 1971 की लड़ाई में बंगलादेश गया कूच विहार सेक्टर में और फिर उस वॉर के बाद देहरादून में मेरी पोस्टिंग हुई। मैं हिमाचल प्रदेश में कमांडिंग ऑफिसर के पद पर कार्य करते हुए वहाँ के युनिट को अलवर लाया और अलवर में आके फिर मैंने आर्मी छोड़ दी।

प्रश्न: आपने जो ये वैल्यु एज्युकेशन में एम.एस.सी किया तो आपको क्यों ऐसा लगा कि एम.एस.सी करना चाहिए?

उत्तर: वो इसलिए क्योंकि आजकल स्कूलों में वैल्यु एज्युकेशन के नाम पर लिप सर्विस करते हैं। मैं चाहता हूँ कि मैं दो काम करूं, एक तो मैं वैल्यु एज्युकेशन के ऊपर लेक्चर दूं स्कूल, कॉलेजेज़ में जाकर और दूसरा मैं काउंसलिंग करूं। वैसे मैंने जर्नलिज़म भी किया है। बहुत सारी पत्रिकाओं में मेरे लेख भी प्रकाशित हुए हैं, परन्तु अब मैं इसमें समय कम दे पाता हूँ।

गोवा-पणजी। माननीय मुख्यमंत्री लक्ष्मीकांत पारसेकर को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. शोभा। साथ हैं ब्र.कु. सुरेखा।

विलासपुर-हि.प्र.। भारत के केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रकाश नड्डा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. रीना।

दिल्ली-हरीनगर। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान मंचासीन कमांडर हर्षद दतार, रिटायर्ड एयर मार्शल दलजीत सिंह, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. शुक्ला, रिटायर्ड स्क्वार्डन लीडर ब्र.कु. अशोक गाबा, ब्रिगेडियर नवनीत कुमार तथा ब्र.कु. हुसैन।

दीव। चपरादा आश्रम के बापू मुक्तानंद जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के बाद समूह चित्र में गुप्त प्रयाग के बापू विवेकानंद जी, दीव रिचीरिच होटल के मालिक प्रकाश जी, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. गायत्री।

दिल्ली-डेरावल नगर। बी.सी.एच. इलेक्ट्रिक लि. कम्पनी के डायरेक्टर और स्टाफ के लिए आयोजित कार्यक्रम में 'जॉय एट वर्क प्लेस' विषय पर समझाते हुए ब्र.कु. लता। साथ हैं अदिति सिंघल,गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर।

ब्रह्मापुर-पी.यु.आर.सी.। हृदय रोग पर आयोजित सेमिनार के उद्घाटन अवसर पर परमात्म स्मृति में दीपक राव,सेक्रेट्री, बी.एस.ई.टी., ब्र.कु. माला, ब्र.कु. वाला, ब्र.कु. डॉ. सतीश गुप्ता,माउण्ट आबू, डॉ. पी.सी. साहु, डॉ. पी.सी. पात्र तथा अन्य।